जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

दृष्टि का अर्थ हैं देखना, समझना। सामान्य रूप से देखने का अर्थ है बाहर की वस्तुओं को देखना। जिसकी दृष्टि जैसी होती है उसको सृष्टि वैसी ही दिखलायी देती है। सज्जन व्यक्ति को संसार में सब सज्जन ही दिखलायी देते है और दुर्जन व्यक्ति को सब दुर्जन ही दिखलायी देते हैं। अच्छाई और बुराई बाहर नहीं हमारे नेत्रों में होती है। इसलिए अपनी दृष्टि सम्यक् रखनी चाहिए। भगवान महावीर, भगवान बुद्ध ने सत्य को देखा। दुःखी मानवता को दुःख से मुक्त करने के लिए उपाय बतलाया। भगवान् बुद्ध ने कहा सर्वं दुःखं अर्थात् यह जगत् दुःख पूर्ण है। जन्म लेना, प्रिय से वियोग, अप्रिय से संयोग सब दुःख है। दुःखों को दूर करने के लिए भगवान बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग का उपदेश दिया। भगवान महावीर ने सृष्टि में सर्वत्र आत्मदर्शन किया। षट्जीव निकाय की प्ररूपणा की। अपने समान सभी प्राणियों की रक्षा का उपदेश दिया। दृष्टि विधायक और रचनात्मक होती है तो सबकुछ ठिक प्रतीत होता है। यदि दृष्टि नकारात्मक रहती है तो सबकुछ बुरा प्रतीत होता है। दृष्टि नकारात्मक रहने पर अच्छाई भी बुराई प्रतीत होती है। अतः निष्पक्ष रहकर चिन्तन करना चाहिए। आन्तरिक भाव कभी भी नहीं बिगाड़ने चाहिए। बीज ही वटवृक्ष बन जाता है। मनुष्य के हाथ में पुरूषार्थ है। कार्य करते रहना चाहिए, रूकावट आने पर भी धैर्य रखना चाहिए। परिस्थितियों को अनुकूल बनाना चाहिए। सकारात्मक सोच, सकारात्मक कार्य और सकारात्मक जीवन व्यतीत करना चाहिए। सृष्टि का नियम है कि जो जैसा बोता है वैसा ही काटता है।

विश्व में जितने भी प्रकल्प किये जा रहे है, वे सब जगत् कल्याण के लिए है। जगत् कल्याण की भावना एक बहुत ही अच्छी भावना है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना इससे जुड़ी हुई है। मानव जीवन बहुत ही बहुमूल्य है। संसार में जितने ही प्राणी हैं उसमें मानव ही सर्वश्रेष्ठ है। अतः संसार के हितचिंतन की बात सोचना सबसे अधिक मानव पर है। मानव ही संसार को स्वर्ग बना सकता है और अपने बुरे कामों से इसको नरक भी बना सकता है। यह मानव तन ईश्वर सत्संग के लिए प्राप्त हुआ है। ईश्वर में आस्था रखना, पुरुषार्थ चतुष्ट्य का पालन

करना, धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष के अनुसार जीवन व्यतीत करना, अहिंसा का आचरण करना, और बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय की कामना करना, मानव जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। मानव को जीवन में प्रमाद नहीं करना चाहिए। प्रमादवश अज्ञान या मिथ्यात्व का आलम्बन कर मनुष्य इस भवचक्र में भटक रहा है। सौभाग्य से उसकी दृष्टि जब मिथ्यात्व पराङ्मुख होती है, तब वह अपने लक्ष्य की ओर उन्मुख होता है और उसकी यह भावना बलवती हो जाती है तथा वह श्रुतिवचनों का अनुसरण कर उसके लिये विहित आचरण का अनुष्ठान करता है। जीवन में निवृत्ति और प्रवृत्ति दो मार्ग है। अपनी दृष्टि के अनुसार लोग जीवन–यापन के मार्गों का चयन करते है। सांसारिक विषय भोगों से बचना ही निवृत्ति है। यह जीवन कुश की नोक पर टिके हुए अस्थिर एवं वायु से प्रकम्पित होकर गिरने वाले जलकण की भांति क्षणभंगुर है। भारतीय संस्कृति में कहा गया है कि सबको अपना जीवन प्रिय है अतः न किसी को मारें, न किसी पर शासन करें, न किसी को दास बनाएं, न किसी को परिताप दें और न किसी का प्राण वियोजन करें। प्राचीनकाल में इसका जो महत्त्व था आज उससे कहीं अधिक महत्त्व है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने जीवन में अहिंसा का पालन किया। अहिंसा उनके लिए जीवन का आधार थी। अहिंसा के बल पर उन्होंने अंग्रेजी शासन से भारत को मुक्त करा लिया। उनका विश्वास था कि जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति विकास की मुख्यधारा से नहीं जुड़ता तब तक सम्यक् विकास नहीं हो सकता। उन्होंने छुआछूत, गरीबी, ऊँच–नीच आदि को दूर करने के लिए जीवन भर प्रयास किया। महात्मा गांधी ने जगत् कल्याण के सर्वोदय, ट्रस्टीशिप, सत्याग्रह, उपवास और सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया। उनका मानना था कि समाज के धनी व्यक्ति धन को व्यक्तिगत न मानकर ट्रस्टी के रूप में कार्य करें और आश्यकतानुसार समाज के लोगों पर खर्च करे तभी धन का सदुपयोग है। सर्व धर्म समभाव अर्थात् सभी धर्मों के साथ समान रूप से व्यवहार करना।

जगत कल्याण के लिए समभाव आवश्यक है। धर्म का मतलब है जो प्रजा के हित को धारण करे वही धर्म है। समभाव का तात्पर्य है आदर का भाव। अतः सर्व धर्म समभाव का अर्थ है सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव। भारतीय संविधान में भारत के सभी नागरिकों को धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया है। भारत में अनेक जातियों के लोग, अनेक धर्मों के लोग,

अनेक मत–मतांतरों के अनुयायी रहते है। सभी सहिष्णुता पूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं, कोई किसी के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता, जिसकी जैसी मान्यता है वह वैसा ही धार्मिक अनुष्ठान करता है। अनेकता में एकता भारत की सबसे बड़ी विशेषता है। यहां पर हिन्दू, बौद्ध, जैन, सिक्ख, ईसाई, मुस्लिम, पारसी आदि अनेक धर्मों के लोग रहते है। वैदिक दर्शन में सर्वे भवन्तु सुखिनः का सिद्धान्त लोक कल्याण का सिद्धान्त है। इसमें लोकहित की कामना की गयी है। इसी प्रकार जैन दर्शन का अनेकान्त वाद, बौद्ध दर्शन का मध्यम मार्ग, ईसाई धर्म का भाई चारा और इस्लाम धर्म का परस्पर प्रेम धार्मिक सहिष्णुता और जगत् कल्याण की शिक्षा देते हैं।